ગુજરાત માધ્યમિક અને ઉચ્ચતર માધ્યમિક શિક્ષણ બોર્ડ
ગાંધીનગર

ધોરણ-12 (સામાન્ય પ્રવાહ)

(ગુજરાતી માધ્યમ)

પ્રશ્નબેંક-2008

વિષય : હિન્દી

પ્રકાશક

સચિવ

ગુજરાત માધ્યમિક અને ઉચ્ચતર માધ્યમિક શિક્ષણ બોર્ડ

સેક્ટર 10-બી, જૂના સચિવાલય પાસે,

ગાંધીનગર-382043

હિન્દી
(009)

गद्य

(1) एक–एक वाक्य में उत्तर (प्रश्न 1 से 3)

(2) बहुविकल्प प्रश्न – (प्रश्न 4 से 6)

(3) दो–तीन वाक्यों में उत्तर – (प्रश्न 7 से 10)

(4) आठ–दस वाक्योमें उत्तर – (प्रश्न – 11, 12)

पद्य

(5) एक–एक वाक्यमें उत्तर (प्रश्न – 13 से 16)

(6) बहु विकल्प प्रश्न – (प्रश्न 17–18)

(7) दो–तीन वाक्योमें उत्तर – (प्रश्न – 19 से 21)

(8) सात–आठ वाक्योमें उत्तर – (प्रश्न – 22, 23)

सूचनाएँ : (1) यह प्रश्नपत्र चार विभागों में बाँटा गया है।

(2) प्रश्नपत्रमें दी गई सूचना के अनुसार उत्तर लिखे।

(3) शुद्ध वाक्यरचना, भाषाशैली एवं स्वच्छता आवश्यक है।

(4) प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दिये गये है।

विभाग-A (प्रश्न - 1 से 3)

- **निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए** **(03)**

(1) सत्तावाद का प्रमुख लक्षण क्या है ?

(2) हम किसकी जय-जयकार करते है ?

(3) अटल को राजधर्म के लिए क्या कहा गया ?

(4) आज मनुष्य कैसे जी रहा है ?

(5) जीवन में अपराधवृत्ति कैसे जन्म लेती है ?

(6) सच्चा देशभक्त कौन है ?

(7) लेखक किसे एक गरिमा कहते है ?

(8) लपटन साहब की वर्दी पहनकर कौन आया था ?

(9) कश्मीर को किसकी उपमा दी गई है ?

(10) अम्मा ने अपना मन कैसे मना लिया ?

(11) मनुष्य पशु से किस तरह भिन्न है ?

(12) निंदकने पिंजडे के बारे में क्या कहा ?

(13) किसका जन्म सार्थक है ?

(14) 'निराला'जी ने अपनी ससुराल यात्रा का वर्णन किस पुस्तक में किया है ?

(15) भारत के लोग मेहनत करना क्यों पसंद नहीं करते ?

(16) गाँधीजी सारे भारत में कैसे फैल गए थे ?

(17) निर्माल्य किसकी संपदा है ?

(18) मोढेरा के सूर्य मंदिर का निर्माण कब और किसके द्वारा हुआ ?

(19) विस्मृति का वरदान कैसे प्राप्त होता है ?

(20) तोता किसका प्रतिक है ?

(21) सूर्योपासक का उल्लेख किन ग्रंथो में मिलता है ?

(22) सिनेमा को किन कुप्रवृत्ति से रोका जाना चाहिए ?

(23) सत्यबोध होने पर मनुष्य क्या पुकार उठ़ता है ?

(24) लेखक 'कलापी'जी ने डल झील की किश्ती की तुलना किसके साथ की है ?

(25) लड़के ने लड़की को कैसे बचाया था ?

(26) नाखून कौन-सी वृत्ति का प्रतीक है ?

(27) क्रांतिकारीयों की दो लाक्षणिकताएँ बताईऐ ?

(28) चंद्रगुप्त के अनुसार नीति और शिक्षा का क्या अर्थ है ?

(29) हमलोंगों का वास्तविक स्वभाव क्या है ?

(30) बेटू कितने साल बाद अम्मा से मिल रहा था ?

(31) शेखर के जीवन की साधना क्या थी ?

(32) व्यवसाय का नियम क्या है ?

(33) भाई की पढ़ाई के लिए जोहरा मे क्या किया ?

(34) अम्मा ने अपना मन कैसे मना लिया ?

(35) निंदक ने पिंजडे के बारे में क्या कहा है ?

(36) चाटवाले द्वारा 'तुम' संबोधन करने पर भी लेखक को बुरा क्यों नहीं लगा ?

(37) संपूर्ण राष्ट्र का हित किस प्रकार हो सकता है ?

(38) लहनासिंह की आँखों में आँसू क्यों भर आए ?

(39) चंद्रशेखर किसे वाणी-विलास कहते हैं ?

(40) शेखर सम्राट अपना गीत सुब्ह क्यों सुनाता है ?

(41) उपदेशकों और संतो का क्या काम है ?

(42) चंद्रगुप्त ने क्या प्रतिज्ञा की ?

(43) लेखक ने जीवन और मृत्यु का क्या अर्थ दिया है ?

(44) रमा ने अम्मा के सामने क्या प्रस्ताव रखा ?

(45) अम्मा किस रोग से पीड़ित थी ?

(46) 'भोरका तारा' महाकाव्य का अंत क्या हुआ ?

(47) मृगनयनी कौन थी ?

(48) होवर-क्राफ्ट का निर्माण कहाँ हुआ था ?

(49) 'निराला'जी को किस खेलों से प्रेम था ?

(50) इस जमाने में कैसे मनुष्य की जीत होती है ?

(51) कोणार्क के सूर्यमदिर का निर्माण वील और किसके द्वारा हुआ ?

(52) पंडितोंने किस विषय पर चर्चा की ?

(53) तोते के पंख और पैर क्यों काट दिये गये ?

(54) चंद्रशेखर आजाद किन चार गुणों के पोषक थे ?

(55) कश्मीर को किसकी उपमा दी गई है ?

(56) खाईयाँ क्यों सूनी बन गई है ?

(57) जेहलम का प्रवाह कैसा दिखता था ?

● **निम्न लिखित विधानों को सही विकल्प द्वारा पूर्ण करके लिखिए । (प्रश्न 4 से 6) (03)**

(1) लहनासिंह ने अपनी जरसी बोधासिंह को दे दी, क्योंकि....

(अ) वह बीमार था और ठंड से बुरी तरह काँप रहा था ।

(ब) लहनासिंह के पास दो जर्सिया थी ।

(क) वह अपनी जरसी लाना भूल गया था ।

(2) जो धर्म आदि पाप की शिक्षा देता है, वही....

(अ) मनुष्य का सच्चा धर्म है ।

(ब) संसार का आदि धर्म है ।

(क) आदि पवित्रता की भी शिक्षा देता है ।

(3) शेर का बच्चा घास खाने लगा, क्योंकि...

(अ) वह बहुत भूखा था ।

(ब) वह भेडो के बीच पल रहा था ।

(क) खाने के लिए कुछ नहीं था ।

(4) एक समाचार-पत्र ने यह मत प्रकट किया कि ...

(अ) दण्ड देने से अपराधी खूँखार हो जाता है ।

(ब) अपराधी को मार डालने से पाप नहीं लगता ।

(क) दण्ड से दया उत्तम है ।

(5) हम सब निर्बल जीव है, क्योंकि...

(अ) हममें बल का अभाव पाया जाता है ।

(ब) छोटे-छोटे प्रलोभनों में पड़कर हम विचलित हो जाते है ।

(क) छोटें-छोटें काम हमारी शक्ति नष्ट कर देते हैं ।

(6) हम छोटे-छोटे संकटों के सामने सिर झुका देते हैं, क्योंकि....

(अ) आखिरकार हम मनुष्य है ।

(ब) हम निर्बल जीव है ।

(क) वे भी हमें बहुत बड़े लगते है ।

(7) हमारी फिल्मो पर....

(अ) गृह–मंत्रालय का नियंत्रण है।

(ब) किसीका कोई नियंत्रण नहीं है।

(क) सेंसर बोर्ड का नियंत्रण है।

(8) बेटूको देखकर रमा का माथा ठनका, क्योंकि....

(अ) छोटा होकर भी वह बड़ों जैसी हरकतें करता था।

(ब) वह उसे अपनी माँ मानने को तैयार न था।

(क) अम्मा के पास रहकर वह बेहद बिगड़ गया था।

(9) अम्मा को बेटु रामेश्वर से भी अधिक प्यार है, क्योंकि....

(अ) बेटु पिता से अधिक समझदार है।

(ब) वह अम्मा का कहना मानता है।

(क) मूलि से ब्याज ज्यादा प्यारा होता है।

(10) हम गाँधीजी की प्रशंसा के अधिकारी नहीं है, क्योंकि...

(अ) हमने उनका पर्याप्त अनुसरण नहीं किया है।

(ब) हम उनकी तरह देश–भक्त नहीं है।

(क) हमें उन्हें देखने–सुनने का अवसर ही नहीं मिला है।

(11) इस देश में अँधकार नहीं रह सकता, क्योंकि...

(अ) अब यहाँ जागृति के दीपक जल गए है।

(ब) अब कहीं भी विद्युत की कमी नहीं है।

(क) गाँधीजी का बताया हुआ मार्ग इसे सदा आलोकित करता रहेगा।

(12) छाया और शेखर के आश्चर्य का ठिकाना नहीं ता, क्योंकि....

(अ) बाहर घोडों की टाप सुनाई दे रही थी।

(ब) उनके विवाह को मंजूरी मिल गई थी।

(क) माधव उनसे भीख माँगने आया था।

(13) मनुष्य अब अपने नाखूनों को नहीं चाहता, क्योंकि...

(अ) वे काटने पर फिर बढ़ने लगते है।

(ब) उसमें उसकी दिलचस्पी नहीं है।

(क) बर्बर युग का कोई भी अवशेष उसके लिए असह्य है।

(14) मनुष्य की मनुष्यता यही है कि....

(अ) वह प्रगति-मार्ग की बाधाओं से नहीं डरता ।

(ब) वह सबके सुख-दु:ख के प्रति सहानुभूति रखता है ।

(क) वह झुक जाता है, पर टूटता नहीं ।

(15) 'सरोज-स्मृति' निरालाजी की अमर कविता है, क्योंकि

(अ) वह उनके जीवन की आखिरी रचना है ।

(ब) वह पुत्री शोक से भरे हृदय के मंथन से निकली है ।

(क) उसमें उनके पत्नी वियोग की गहरी वेदना है ।

(16) माधव आर्य देवदत्त के साथ....

(अ) तक्षशिला के साथ जाने को इच्छुक न था ।

(ब) अपनी मित्रता निभाना चाहता था ।

(क) उनका मंत्री बनकर तक्षशिला गया ।

(17) पिंजरे को देखने के लिए देश-विदेश के लोग आए, क्योंकि....

(अ) उसमें बीजली के बल्ब बड़े सुंदर ढ़ंग से लगाए गए ते ।

(ब) वह अपने ढ़ंग का अनोखा पिंजरा था ।

(क) उसमें रखा गया पक्षी आदमी की तरह बोलने लगता था ।

(18) सूर्य को जल-अर्ध्य देने की परंपरा....

(अ) आज भी गाँवों में देखी जाती है ।

(ब) सभी संस्कृतियों में पाई जाती है ।

(क) उसके निराकार रुप की उपासना है ।

(19) मृत्यु के कुछ समय स्मृति साफ हो जाती है, क्योंकि....

(अ) अगले जन्म के लिए व्यक्ति तैयार हो जाता है ।

(ब) जन्मभर की घटनाएँ एक-एक करके उसके सामने आती है ।

(क) उस समय व्यक्ति के सामने दिया जलाकर रोशनी कर दी जाती है ।

(20) काम को खराब करने का अर्थ है....

(अ) समय को खराब करना ।

(ब) वातावरण को खराब करना ।

(क) अपने आप को खराब करना ।

(21) निरालाजी को यह पसंद नहीं था, कि.....

(अ) कोई उनकी मूँह–देखी प्रशंसा करे।

(ब) कोई इन्हें 'तुम' कहकर संबोधित करे।

(क) कोई उन्हें कवि सम्मेलन में बुलाए।

(22) लेखक को 'निर्माल्य' बनने की इच्छा हुई, क्योंकि....

(अ) निर्माल्य को शाश्वत प्रतिष्ठा मिली हुई है।

(ब) उसमें बेला के भी फूल होते है।

(क) उसने पुस्तक में निर्माल्य की महिमा पढ़ी थी।

(23) नवग्रहों की पूजा का विधान....

(अ) ऋग्वेद में बताया गया है।

(ब) मनुस्मृति की रचना का मुख्य हेतु है।

(क) याज्ञवल्कय ऋषिने किया था।

(24) अच्छोद सरोवर का वर्णन....

(अ) बाणभट्ट ने कादम्बरी में किया है।

(ब) व्यास ने महाभारत में किया है।

(क) राजशेखर ने राज तरंगिणि में किया है।

(25) राजा ने तोते को देखने की जरूरत नहीं समझी, क्योंकि....

(अ) तोता पिंजरे में सोया हुआ था।

(ब) शिक्षण देने की उत्तम व्यवस्था से वह संतुष्त था।

(क) उसे जल्दी ही वहाँ से लौटना था।

(26) सुखी और सुरक्षित रहने के लिए जरुरी है कि....

(अ) हर व्यक्ति आत्मखोज करे।

(ब) हम बाहरी साधनों पर निर्भर न रहे।

(क) विज्ञान के सिद्धांतो का पालन किया जाए।

(27) नौजवानों को सत्तावाद से दूर रहना चाहिए, क्योंकि....

(अ) सबको सत्ता मिले, यह संभव नहीं है।

(ब) उससे वे कामचोर और आराम–तलब बनते हैं।

(क) वह स्व–पराजय की ओर ले जाती है।

(28) अपने राष्ट्र-प्रेम का परिचय देकर ....

(अ) शेखर सचमुच महाकवि बन गया था।

(ब) शेखर 'भोर के तारे' से प्रभात का सूर्य बन गया था।

(क) शेखर लोगों की आँखों का तारा बन गया था।

(29) भूलना एक महान गुण है, क्योंकि...

(अ) उससे मनुष्य की सही पहचान होती है।

(ब) मस्तिस्क को आराम मिलता है।

(क) उससे मन को लगी चोट ठीक हो जाती है।

(30) अभावों में प्रसन्न रहनेवाले लोग....

(अ) अपने भीतर से पोषक प्राप्त करते है।

(ब) केवल हमारे देश में ही पाये जाते है।

(क) प्रसन्न होने का दिखावा करते है।

(31) अपना कर्तव्य ठीक प्रकार से करना चाहिए, क्योंकि....

(अ) इससे मानसिक शान्ति मिलती है।

(ब) इससे दूसरो को सीख मिलती है।

(क) यही देशभक्ति है।

(32) निराला जी का मन प्रायः क्षुब्ध रहता था, क्योंकि...

(अ) उन्होंने जीवन में लगातार विरोध सहन किया था।

(ब) उनकी पत्नी बीमार रहा करती थी।

(क) वे जो लिखना चाहते थे, उसे लिख नहीं पाते थे।

(33) कौओं की कर्कश-वाणी प्रारंभ हो गई है, क्योंकि....

(अ) नर्मदा आनंद-प्रदान करनेवाली नदी न रहे।

(ब) कोई कोयल की मधुर कूक न सुन सके।

(क) वहाँ अन्य पक्षी न आ सके।

(34) आपके जीवन का नियंत्रण....

(अ) अपने हाथों में है।

(ब) परिवार के हाथों में है।

(क) भगवान के हाथों में है।

(35) मित्र की पत्नी का रेशमी दुपट्टा ही ओढ़कर....

(अ) वे लोग पर रौब डाल रहे थे।

(ब) वे पूजा-पाठ में बैठ़ गये थे।

(क) वे कविता करने बैठ गये थे।

(36) प्रत्येक पुरुष के लिए स्त्री एक....

(अ) कविता है।

(ब) जीवन साथी है।

(क) अर्धांगिनी है।

(37) धतूरे और मंदार के फूलों को मैं विधिवत् ताक पर रख देता हूँ, क्योंकि....

(अ) उनकी अवधूत मादकता मेरे वश की बात नहीं।

(ब) ये फूल मुझे तनिकनहीं सुहाते।

(क) ये फूल शिव को कभी नहीं चढ़ाये जाते।

(38) लक्ष्यों को आसानी से हांसिल करने के लिए....

(अ) शिष्टाचार के नियमों को सीखते हैं।

(ब) शिष्टाचार से हटकर योग्य निर्णय लेते है।

(क) शिष्टाचार के मौलिक विचारों को आचरण में रखते हैं।

(39) सूर्य ने मानवजात को आदिकाल से ही प्रभावित किया है, क्योंकि....

(अ) दिन, रात्रि, मौसम, जीवों, वनस्पतियों का मूल सूर्य है।

(ब) सूर्य आदि देव, देवादिदेव प्रत्यक्ष देव माने जाते है।

(क) इसलिए मानवमात्र स्नान के बाद ईन्हें अर्ध्य अर्पित करते हैं।

(40) भक्तों की बाहों में जब तक बल नहीं आयेगा, तब तक....

(अ) यहाँ क्रम रहेगा ?

(ब) ऐसे नया-पुराना होता रहेगा ?

(क) नया निर्णय कैसे होगा ?

● **निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यो में लिखिए : (प्रश्न 7 से 10)** **(08)**

(1) निर्माल्य को शाश्वत प्रतिष्ठा मिलने का क्या कारण है ?

(2) राजा ने तोते की प्रगति किस रूप में देखी ?

(3) 'निराला'जी किसी भी प्रसंग का सक्रिय प्रदर्शन किस तरह करते है ?

(4) शेक्सपियर ने जनता के बारे में क्या कहा है ?

(5) हम किसकी प्रशंसा के अधिकारी है ?

(6) भारतवर्ष पर किसने चढ़ाई की ?

(7) मनुष्य समाज को संगठित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

(8) जीवन में खेल का महत्त्व क्या है ?

(9) सुबेदारनी ने लहनासिंह से दामन फैलाकर क्या माँगा ?

(10) उज्जयिनी में आर्य देवदत्त के जीवन की सजावट कैसी थी ?

(11) 'निराला' जी अपने विरोधियों के तर्क को किस तरह शांत करते थे ?

(12) चाणक्य, चंद्रगुप्त और सिंहरण को क्या सलाह देता है ? क्यों ?

(13) लेखक चंद्रशेखर के स्मरण को मन का पुण्य क्यों मानता है ?

(14) लेखक सिनेमा को साहित्य क्यों नहीं मानते ?

(15) धर्मों की तुलना नदियों से क्यों की गई है ?

(16) नेहरु जी किस लिए लज्जा का अनुभव करते है ?

(17) हमारी विरासत क्या है ?

(18) हमारे देश में किस प्रकार जागृति आ सकती है ?

(19) लहनासिंह कहाँ और किस तरह मरना चाहता था ?

(20) बेटू के साथ अम्मा के दिन कैसे कटते थे ?

(21) लाखीगाँव की नारियों के बारे में क्या सोचती है ?

(22) विवेकानंद के अनुसार धर्म क्या है ?

(23) अम्मा के चेहरे पर मायूसी क्यों छा गई ?

(24) हम किसकी प्रशंसा के अधिकारी नहीं बन सकते है ?

(25) सूर्य को 'रोगनाशक' क्यों कहा गया है ?

(26) श्रम के प्रति भारतवासियों का क्या दृष्टिकोण है ?

(27) एक अखबार के संपादन ने आँकडे देखकर क्या सिद्ध किया ?

(28) वीरगति पाते समय आर्य देवदत्त ने क्या कहा था ?

(29) हमारी परंपरा के बारे में कालिदास ने क्या कहा है ?

(30) सिंहरण के अनुसार कुचक्र कौन रच सकता है।

(31) गाँधीजी सारे भारत में कैसे पैल गए थे ?

(32) 'बिजनेस इज बिजनेस' – का अर्थ क्या है ?

(33) अम्मा ने बेटू के आगमन पर क्या–क्या तैयारियाँ की ?

(34) 'तुम लोगों में उदारता नहीं है' – कथन स्पष्ट कीजिए।

(35) सिंहरण को किस बात की आशंका है ?

(36) लेखक कलाम के अनुसार जीवन कैसे जिया जा सकता है ?

(37) सुबह होते ही तोता क्या करता है ?

(38) सिनेमा का उद्देश्य क्या है ?

(39) गाँधीजी को क्यों कष्ट होगा ?

(40) गीता–महाभारत में सूर्य के बारे में क्या कहा गया है ?

(41) सूर्य को किसका प्रतीक माना गया है ?

(42) जीवन हेतु थोमस के क्या विचार है ?

(43) कश्मीर जाकर लेखक क्या सोचते है ?

(44) तोते के पिंजरे में क्या नहीं था ?

(45) हमारे देश में किस प्रकार जागृति आ सकती है ?

(46) मनुष्य मात्र का धर्म क्या है ?

(47) चाणक्य तक्षशिला में क्यों रुके थे ?

(48) अटल जब जागीरदार बन गया तो मृगनयनी ने क्या सोचा ?

(49) झील में प्रविष्ट होना कैसा था ? लेखक ने क्या किया ?

(50) साहित्य प्रेमी व्यक्ति सिनेमा देखना क्यों पसंद नहीं करता ?

(51) विस्मृति का महत्त्व क्या है ?

(52) 'निराली' जी ने अपनेयुग के विवाह के अवसर पर क्या किया ?

(53) डाल झील में इन्द्रधनुष्य की सृष्टि कब होती है ?

(54) लेखक ने एक दिन सपने में क्या विचित्र बात देखी ?

(55) जीवन से प्रेम होने का क्या लक्षण है ?

(56) लड़की के उत्तर पर लड़के पर क्या असर हुआ ?

(57) देवता के निर्माल्य और प्रसाद में समानता और क्या अंतर है ?

(58) नौकरी मिलने पर हमारे यहाँ के लोगों में क्या परिवर्तन दिखाई देता है ?

(59) कोतवाल की शिकायत पर क्या किया गया ?

(60) आज शरम करना बुरा क्यों नहीं माना ?

(61) तुलसी क्यारों में रखे फूलों के बारे में लेखक की पत्नी ने क्या कहा ?

(62) चंद्रशेखर किन चार गुणों के पोषक थे ?

(63) कृषकों की कला के बारे में मृगनयनी के विचार स्पष्ट कीजिए।

(64) प्रेमचंदजी शराब और दूध के उदाहरण से क्या समझाना चाहते है ?

(65) मृत्यु के कुछ समय पहले क्या होता है ?

(66) मनुष्य को कब नाखून की जरूरत थी ? क्यों ?

(67) ऊँचाई पर से लेखक कलापी ने क्या-क्या देखा ?

(68) सत्तावाद के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लोग क्या करते है ?

(69) प्रसाद और निर्माल्य में क्या मौलिक अंतर है ?

(70) जीवन में सफलता पाने के लिए डो. कलाम क्या कहते है ?

● **निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यो में लिखिए। (प्रश्न 11 से 12)** **(08)**

(1) अम्मा के वात्सल्य का चित्रण।

(2) 'भोर का तारा' एकांकी के शीर्षक की यथार्थता।

(3) गौतम ने मनुष्यता के बारे में कौन-से विचार किए है ?

(4) 'मृग-नयनी का मनोमंथन' शीर्षक की यथार्थता सिद्ध कीजिए।

(5) सरोज की मृत्यु का निराला जी पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(6) देश को कैसे नागरिकों की आवश्यकता है ?

(7) 'विज्ञान और आत्मखोज' आत्मकथा का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(8) द्विवेदी जी के अनुसार मनुष्य पशु से किस प्रकार भिन्न है ?

(9) लहनासिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(10) साहित्य और सिनेमा के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

(11) गाँधीजी के निधन पर नेहरुजी ने क्या अनुभव किया ?

(12) 'चन्द्रशेखर आजाद' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(13) वृद्ध सरकारी कर्मचारी ने लेखक के प्रश्न का उत्तर कैसे समझाया ?

(14) छाया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(15) मनुष्य अपने बच्चों को नाखून न काँटने पर क्यों डाँटता है ?

(16) चाणक्य की चारित्रिक विशेषताएँ।

(17) सूर्य कहाँ और किस रूप में प्रतीक बन गया ?

(18) जीवन में सफलता पाने के लिए क्या करना चाहिए-समझाईये।

(19) 'तोते की शिक्षा' कहानी का व्यंग्य समझाईये।

(20) भारत में सूर्य-मंदिरों का निर्माण काल-कहाँ और किनके द्वारा हुआ ?

(21) जर्मन स्त्री के साथ मजदूर ने कैसा व्यवहार किया ?

(22) भारतवर्ष को सही अर्थ में स्वाधीन कैसे बनाया जा सकता है ?

(23) 'मजबूरी' कहानी द्वारा मन्नु-भंडारी क्या कहना चाहती है ?

(24) जेहलम के रूप-सौन्दर्य का वर्णन।

(25) कश्मीर यात्रा का वर्णन कीजिए।

(26) 'मानव का भाग्य पाठ के किन उदाहरणों द्वारा मानव अपने असली स्वरुप को पहचान सकता है ?

(पद्य विभाग - 20 अंक)

- **निम्न लिखित प्रश्नो के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए। (प्रश्न 13 से 16)** **(04)**

(1) प्रभु दानी है तो कवि क्या है ?

(2) कविने बीती हुई बातों को भूल जाने की सलाह क्यों दी है ?

(3) लक्ष्मण नारी की तुलना किसके साथ करते है ?

(4) कविने दिल्ली को कैसी सेज बताया है ?

(5) कवयित्रीने अपने स्पंदन के बारेमें क्या बताया है ?

(6) महा-जागरण गर्जन से किसकी प्राप्ति तो है ?

(7) कबीर ने किस को स्मशान कहा है ? क्यों ?

(8) आपस की फूट का क्या परिणाम होता है ?

(9) कवयित्रीने अपनी पीड़ा का चंदन किसे कहा है ?

(10) दिल्ली किसका दर्पण नहीं हो सकता ?

(11) बबूलों को किसकी उम्र मिल गई है ?

(12) नायिका अपने प्रियतम से कौन-सा वरदान माँगती है ?

(13) कबीर ने संसार को कैसा देश कहा है ?

(14) किसके तार मूक हो गए है ?

(15) दिल्लीवाले किसके गीत गाते है ?

(16) बड़े-बड़े वरदान कहाँ छिपे हुए है ?

(17) शायर की जबान सिलने से क्या होगा ?

(18) सूरदास ने 'कामधेनु' किसे कहा है ?

(19) बिहारीने बाज के माध्यम से किसको संबोधन किया है ?

(20) तुलसीदास प्रभु को क्या-क्या मानते है ?

(21) कवि हमें किसमें चित्त लगाने को कहते है ?

(22) कुत्ता रोटी के लिए घर–घर क्यों भटकता है ?

(23) राजा ने पिटारे में मीराँ के लिए क्या भेजा ?

(24) कवि मिश्र जी हमें कौन–सी भूल न करने की सलाह देते है ?

(25) पेड़ कुर्सी कब बन जाता है ?

(26) कस्तुरी कहाँ पाई जाती है ?

(27) अंतरिक्ष में किसकी ध्वनि मंडराएँ ?

(28) चिराग के बारे में क्या तय था ?

(29) हर मुसीबत किस तरह कटती है ?

(30) नए युग के अग्रदूत कौन है ?

(31) हारिल किसका प्रतीक है ?

(32) पढ़–लिखकर पेड़ क्या बन गया ?

(33) कवि बच्चन जी के अनुसार गीत कौन बाँट सकता है ?

(34) क्या करने से कौआ हंस नहीं बन सकता ?

(35) कविने सबसे प्यारा जतन किसे कहा है ?

(36) हारिल ने स्रष्टा का कौन–सा गुर पहचान लिया है ?

(37) बिना प्राण के कौन श्वास लेता है ?

(38) कवि का मन कृष्ण के रूप में किस प्रकार मिल गया ?

(39) पेड़ धारा पूर्वजन्म की बात न भूलने का क्या सबूत है ?

(40) किस शपथ से मनचाहा परिणाम पाया जा सकता है ?

(41) किसान और मजदूर जागृत होकर क्या करेंगे ?

(42) दिल्ली कैसी देवपुरी है ?

(43) प्रलयकारी आँख किसकी होती है ?

(44) बच्चन जी किन लोगों को पसंद नहीं करते ?

(45) सबसे गहरा पतन कौन–सा है ?

(46) कवि बेकरार क्यों है

(47) 'बरखा की ऋतु उतरी' का क्या आशय है ?

(48) कौआ कहाँ बैठकर क्या रखा रहा है ?

(49) तोता किसे नहीं छोडता ? क्यों ?

(50) कवि क्या अजमाने के लिए कहता है ?

● **निम्न लिखित विधानों के सही विकल्प द्वारा पूर्ण कीजिए । (प्रश्न 17 से 18)** **(02)**

(1) राही है सब एक डगर के....

(अ) सब पर प्यार लुटाता चले ।

(ब) पथ–पथ फूल बिछाता चल ।

(क) पनघट–पनघट गाता चल ।

(2) उषा जाग उठी प्राची में ....

(अ) तुझे शून्य नभ घेररहा है ।

(ब) आह्वान यह नूतन दिन का ।

(क) पर क्या जीवन केवल मिट्टी है ।

(3) जा घट प्रेम न संचरे....

(अ) साँस लेत बिनु प्राण ।

(ब) क्यों पहुचन में बास ।

(क) सो घट्ट जान मसान ।

(4) अक्षत पुलकित रोम....

(अ) नव उत्पल का उन्मीलन है ।

(ब) मधुर मेरी पीड़ा का चंदन है ।

(क) प्रति पल मेरे स्पंदन है ।

(5) वेदना का वरदान चाहे दे...

(अ) ना जागूंगी ।

(ब) रेत सूखी अवलोकूंगी ।

(क) प्रिया, नहीं रोकूंगी ।

(6) बरसे आग, जलद जल जाये...

(अ) भस्मसात् भूधर हो जायें ।

(ब) तारे एक–एक हो जाये ।

(क) धुआँधार जग में छा जाये ।

(7) होठों को सत ही शब्दो में....

(अ) जो औरों का बोझ बटाए ।

(ब) दो तिनके भी कब हट जाये ।

(क) गहराई को छू पाती है ।

(8) तोहि–तोहि नाते अनेक...

(अ) चरन–सरन पावै ।

(ब) मानिये जो भावै।

(क) तु सब विधि हितु मेरो ।

(9) भगवानों की बस्ती में है...

(अ) किसी होंठ पर न सजे बंसी ।

(ब) जुल्म बहुत ईन्सानों पर।

(क) सबको शीश जुकाता चल ।

(10) ये लोग कितने मुनासिब है...

(अ) इस बहर के लिए ।

(ब) गुल–महोरके लिए ।

(क) उम्रभर के लिए ।

(11) प्राणों के लाले पड़ जाये...

(अ) धुँआधार जग में छा जाये।

(ब) नभ का वक्ष–स्थल कट जाये ।

(क) त्राहि–त्राहि स्वर नभ में छाये ।

(12) ऐसे भारी वृक्ष को...

(अ) कुलहरी देत गिराय ।

(ब) मारिं के जमीं गिराय ।

(क) समुद्र में देत बहाई ।

(13) उस असीमका सुंदर मंदिर...

(अ) नित प्रिय का अभिनंदन है ।

(ब) मेरा यह दीपक मन रे ।

(क) मेरा लघुत्तम जीवन रे ।

(14) प्रेम में कुछ भी...

(अ) योग्यता न होनी चाहिए ।

(ब) बुरा होता नहि ।

(क) कुछ भी करो ।

(15) नयन–नयन तरसें सपनों को...

(अ) गलियाँ तरसे झुलों को।

(ब) किसी हाथ में बीन नहीं।

(क) आँचल तरसे फूलों को।

(16) बड़े न हूजै गुननु बिनु...

(अ) हींग न होई सुगंध।

(ब) लघु पुनि बड़ी लखाई।

(क) बिरद–लड़ाई पाई।

(17) जहाज का पंछी उड़ कर फिर आता है...

(अ) जहाज पर।

(ब) घर पर।

(क) वृक्ष पर।

(18) प्यासी है हर गागर दिल की...

(अ) उसका प्यास बुझाता चल।

(ब) गंगाजल छलकाता चल।

(क) पनघट से पानी लेता चल।

(19) कथनी तजि करन करे...

(अ) जीवन सुखमय बनता है ?

(ब) विष से अमृतमय होता है ?

(क) विष से जीवन विपैला होता है ?

(20) कुमति के फंदे में फंसने से...

(अ) संगति सुमति का प्रभाव नहीं पड़ता ?

(ब) ईन्सान ईन्सानियत खो बैठ़ता है ?

(क) जीवन दूभर हो जाता है ?

(21) हम मानव का निर्माण अमर लिखकर...

(अ) श्रम का वंदन करते है।

(ब) सुख गर्जन करते है।

(क) मेघा का गायन गाते है।

● **निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए । (प्रश्न 19 से 21)** **(06)**

(1) कवयित्री के प्रियतम की पूजा में कौन-सा दीपक जलता है ?

(2) आँखों का पानीसूखने का क्या अर्थ है ?

(3) शपथ के बारे में कवि क्या कहता है ?

(4) नायिका वेदना पाकर भी मौन क्यों है ?

(5) नायिका के घर के पास पंचाग से ही क्यों तिथि देखी जा सकती है ?

(6) उर्मिला लक्ष्मण से क्या अपेक्षा रखती है ?

(7) 'भट़क रहा है, सारा देश अँधेरे में' का तात्पर्य समझाईए ।

(8) बबूलों को समुद्र की उमर कैसे मिल गई है ?

(9) पहली और मुकरी का अंतर स्पष्ट कीजिए ।

(10) कवि गिरधर चतुर लोगों को क्या सीख देते है ?

(11) पेड़ को क्या स्वप्न आया ?

(12) दिल्ली देश का दर्पण क्यों नहीं है ?

(13) करनी और कथनी का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए ।

(14) अपने मन की योजना को प्रकट न करनेसे क्या लाभ होता है ?

(15) कवि बच्चन हमें क्या सलाह देते हैं ?

(16) तुलसीदास भगवान को क्या-क्या मानते है ?

(17) तोता कभी पेड़ को छोड़कर क्यों नहीं जाता ?

(18) नाक के मोती के बारे में लक्ष्मण की क्या कल्पना है ?

(19) बिहारी के दोहो को 'गागर में सागर' क्यों कहा है ?

(20) कबीर ने संसार को कैसा देश बताया है ?

(21) आँगन और गलियाँ किसके लिए तरस रहे है ?

(22) मन प्रसन्न होनेपर कवि कहाँ जाने की सलाह देता है ?

(23) कवि की तान का जलद,भूधर और आकाश पर क्या असर होता है ?

(24) तिनका आसमान से हलचल किस माध्यम से मचाता है ?

(25) पुष्प में सुगंध के माध्यम से कबीर क्या कहना चाहते है ?

(26) कवि गिरिधर बीती बातों के बारे में क्या सलाह देते है ?

(27) नायिका अपना सर कहाँ रखना चाहती है और क्यों ?

(28) कवि ने जनशक्ति को संबोधित करते हुए क्या कहा ?

(29) बुरे व्यक्ति को सुधारने के लिए कवि ने कौन-सा प्रयोग करने का कहा ?

(30) किसान और मजदूर जागृत होकर क्या करेंगे ?

(31) शांति दंड कब टूट जाएगा ?

(32) कवि ने हसीन नजारा किसे कहा है ? क्यों ?

(33) विप्लव-गान से प्राणों के लाले कैसे पड़ जाऐंगे ?

(34) आपस की कूट का परिणाम क्या होता है ?

(35) राणा ने 'सूल-सेज' क्यों भेजी थी ? उसका क्या परिणाम आया ?

(36) शुक कब विस्मित हुआ ?

(37) सिद्धार्थ घूमने जाते है तब क्या-क्या होता है ?

(38) झुठी लडाई से क्या नहीं होता ?

(39) 'रेशम ही रेशम' कहाँ दिखते है ? कैसे ?

(40) ईन्सान पर जुलम कहाँ अधिक है ?

(41) पंछी का उदाहरण देकर कवि क्या कहना चाहता है ?

(42) कवि कवियों से क्या सुनना चाहते हैं ?

(43) कवि हारिल से क्या कहते है ?

(44) हींग को कपूर के साथ रखने पर भी वह सुगंधित क्यों नहीं होती ?

(45) दिल्ली का वर्णन कवि ने किन शब्दो में किया है ?

(46) जगत हारिल का उपहास क्यों करेगा ?

(47) खुसरो की पहेली केअनुसार छतरी के क्या लक्षण है ?

(48) नायिका कौन-सा एक ही झोका सदा के लिए चाहती है ?

(49) कवि ने विपरितता में भी प्रेरणा का संदेश किस प्रकार दिया है ?

(50) सूरदास ने दुर्मति किसे कहा है ?

● **निम्न लिखित प्रश्नों के सात-आठ वाक्यो में उत्तर लिखिए । (प्रश्न 22 से 23)** **(08)**

(1) राणाजी ने मीराँ के लिए क्या-क्या भेजा ? मीराँ ने उन्हें किस रूप में पाया ?

(2) 'दे मन का उपहार'काव्य में कवि हमें क्या संदेश देते है ?

(3) 'कहाँ तो तय था' गजल हमारी सामाजिक व्यवस्था को कैसे उजागर करती है ?

(4) 'उड़ चल हारिल' के माध्यम से कवि हमें क्या संदेश देते है ?

(5) दूसरों का दु:ख-दर्द किस प्रकार कम किया जाता है ?

(6) 'गीत' काव्य में कवि ने मजदूर और किसान को क्या प्रेरणा दी है ?

(7) कवि ने दिल्ली को भारत का 'रेशमी नगर' क्यों कहा है ?

(8) बिहारी के दोहोंको 'गागर में सागर' क्यों कहा जाता है ? समझाईए ?

(9) गिरिधर की कुण्डलियों में कौन-कौन सी नीतिपरक बातें है ?

(10) 'सब पर प्यार लुटाता चल' द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

(11) सूर ने किन उदाहरणों द्वारा अपनी अनन्य भक्ति का भाव प्रकट किया ?

(12) 'नहीं रोकूंगी' काव्य का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

(13) 'उर्मिला का अनुराग' के आधार पर नारी के प्रति गुप्त जी का दृष्टिकोण ।

(14) महादेवी वर्मा बाह्य आडंबरों को महत्त्वहीन क्यों मानती है ?

(15) 'सभी मछलियाँ एक ताल की' माध्यम से कवि क्या कहना चाहते है ?

(16) कबीर ने गर्व करने के लिए क्यों मना किया है ?

(17) 'सख्ती से नहीं, स्नेह से काम होता है' - स्पष्ट कीजिए ।

(18) 'पेड़' काव्य के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

(19) 'विप्लव-गान' कविता में कवि का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए ।

(20) कवि 'नवीन' जी का आक्रोश किस व्यवस्था के प्रति है ?

(21) ओछा तिनका पावन तिनका किस प्रकार बन जाता है ?

(22) 'सर्व सुख की महक में रहूँ' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(23) 'तुलसी और भगवान के बीच कैसे-कैसे रिश्ते है ?

(24) 'एक कौवा खीर खा रहा है, अपने खानदान के साथ' - समझाईए ।

(25) 'पथ-पथ फूल बिछाता चल' काव्य में कवि क्या कहते है ?

(26) धनवान निर्धन के दु:ख दर्द के प्रति संवेदन शून्य क्यों हो जाते हैं ?

(27) 'उर्मिला' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

●●●

विभाग–B

व्याकरण आधारित प्रश्न । **18 अंक**

(9) पर्यायवाची शब्द (प्रश्न – 24 से 26)

(10) विलोम शब्द – (प्रश्न – 27 से 29)

(11) संधि–विच्छेद – (प्रश्न – 30 से 32)

(12) शब्दसमूहों के लिए एक शब्द – (प्रश्न – 33 से 35)

(13) मुहावरें–अर्थ – वाक्य–प्रयोग – (प्रश्न – 36–37)

(14) कहावतें–अर्थ (प्रश्न – 38–39)

(15) भाषाशुद्धि – (प्रश्न – 40–41)

● ● ●

विभाग–B

व्याकरण

प्रश्न–24 से 26

- **निम्न लिखित शब्दों के पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द लिखिए।** **(03)**

(1)	धवल	(23)	किश्ती	(45)	विलीन
(2)	ओझल	(24)	कपोल	(46)	प्रतीक
(3)	क्षमता	(25)	खेमा	(47)	तारीफ
(4)	अंबुज	(26)	उलाहना	(48)	कयामत
(5)	आनन	(27)	मराल	(49)	कृतज्ञ
(6)	कायरता	(28)	मायूसी	(50)	स्वच्छन्द
(7)	नकाब	(29)	कथोपकथन	(51)	दिवंगत
(8)	भोर	(30)	अंगीठी	(52)	तहमद
(9)	सुकृत	(31)	पुंज	(53)	एहसान
(10)	पावन	(32)	कुडमाई	(54)	षडयंत्र
(11)	आवाज	(33)	मुनासिब	(55)	दिक्कत
(12)	सराहना	(34)	महक	(56)	हाट
(13)	दाडिम	(35)	लोचन	(57)	श्वान
(14)	मसि	(36)	झोंपडी	(58)	पत्रा
(15)	आलोक	(37)	मधुकर	(59)	अनुराग
(16)	नजारा	(38)	अचरज	(60)	चारु
(17)	आवाज	(39)	कृपण	(61)	ग्लानि
(18)	विषाद	(40)	उपहार	(62)	अस्मत
(19)	निधन	(41)	मौजुद	(63)	पुरस्कार
(20)	विष	(42)	आवास	(64)	शाश्वत
(21)	सदन	(43)	मजबूर	(65)	छेरी
(22)	जुलम	(44)	लाचारी	(66)	आर्द

प्रश्न – 27 से 29

- **निम्न लिखित शब्दों के विलोम (विरोधार्थ) शब्द लिखिए ।** **(03)**

(1) संतुलन
(2) कृतज्ञ
(3) प्रतिकुल
(4) आलोक
(5) योग
(6) अवज्ञा
(7) उचित
(8) स्वच्छन्द
(9) दिवंगत
(10) मूक
(11) निर्दय
(12) फतह
(13) समस्या
(14) पवित्र
(15) प्यार
(16) गँवार
(17) वरदान
(18) सार्थक
(19) पाशवी
(20) स्वर्ग
(21) कोमल
(22) ईमान
(23) पतन
(24) प्रबल
(25) उत्थान
(26) आशीर्वाद
(27) बीमार
(28) ज्योति
(29) बाह्य
(30) समाधान
(31) देव
(32) संगठन
(33) अमृत
(34) साया
(35) फतेह
(36) उलझन
(37) कथन
(38) प्रभात
(39) विनम्र
(40) स्वार्थ
(41 दोस्त
(42) प्रबल
(43) खिलना
(44) धरित्री
(45) स्वदेशी
(46) निराकार
(47) शिष्टाचार
(48) तेजस्वी
(49) शाश्वत
(50) कुदरती
(51) सक्रिय
(52) गंदकी
(53) शिथिल
(54) सज्जन
(55) उन्नति
(56) अभय
(57) स्मृति
(58) देशभक्त
(59) प्रसन्नता
(60) सन्नाटा
(61) निर्भीक
(62) अग्रज
(63) प्राचीन
(64) अमर
(65) प्रत्यक्ष
(66) उत्तीर्ण
(67) श्रोता
(68) सम्मान

प्रश्न 30 से 32

- **निम्न लिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए ।** **(03)**

(1)	आविष्कार	(24)	निर्मल	(47)	दीर्घायु
(2)	व्याख्यान	(25)	रामेश्वर	(48)	व्यस्त
(3)	पृथ्वी	(26)	समांतर	(49)	प्रतिष्ठा
(4)	उन्नति	(27)	यद्यपि	(50)	विद्यार्थी
(5)	विनोदमृत	(28)	स्वागत	(51)	परीक्षा
(6)	नयन	(29)	पावक	(52)	सिद्धार्थ
(7)	मनोविज्ञान	(30)	तपोवन	(53)	यथार्थ
(8)	स्वस्थ	(31)	प्रतीक्षा	(54)	धर्मांध
(9)	संसर्ग	(32)	उज्जवल	(55)	प्रार्थना
(10)	प्रयाण	(33)	प्रांगण	(56)	चरणामृत
(11)	प्रत्येक	(34)	स्नेहानुरोध	(57)	मनोरंजन
(12)	अतिशयोक्ति	(35)	संतोष	(58)	उल्लास
(13)	विजयोन्मादी	(36)	विषाद	(59)	समाप्त
(14)	मनोबल	(37)	निराशा	(60)	उद्योग
(15)	संतुष्त	(38)	निर्णय	(61)	नीरव
(16)	मनोवृत्ति	(39)	प्रणाम	(62)	गायक
(17)	औषधालय	(40)	अनेक	(63)	कालांतर
(18)	तल्लीन	(41)	भावावेश	(64)	उद्धार
(19)	संस्मरण	(42)	एकाध	(65)	वंशानुगत
(20)	अनायास	(43)	सूर्योपासना	(66)	अनेकार्थी
(21)	देवेश्वर	(44)	नारायण	(67)	मग्नावस्था
(22)	व्यवस्था	(45)	नाविक	(68)	अभ्यास
(23)	ईत्यादि	(46)	उन्नति		

प्रश्न – 33 से 35

- **निम्न लिखित शब्दसमूहों के लिए एक-शब्द लिखिए :** **(03)**

(1) जो पहले कभी न हुआ हो । –

(2) स्वामी या पालक से द्रोह करनेवाला –

(3) देवताओं का विधिवत् स्थापन –

(4) सात दलों का समूह –

(5) पर्वत को धारण करनेवाला –

(6) ईच्छाओं को पूर्ति करनेवाला मणि –

(7) पूजा के काम में आनेवाले बिना टूटे हुए चावल –

(8) फैंककर चलाया जानेवाला हथियार –

(9) आत्मा की तलाश –

(10) नौकरी की दरखास्त –

(11) आदमी का सिर –

(12) होड लगाने वाला –

(13) हत्या करनेवाला –

(14) जिसमें मैल न हो –

(15) सात दिनों का समूह –

(16) अल्प जाननेवाला –

(17) मूँह पर परदा –

(18) जिसका निवारण करना कठिन हो –

(19) पैरों की धूल –

(20) पाँच नदियों का प्रदेश

(21) मोहित करनेवाली वाणी –

(22) जिसका पार न हो –

(23) जो आसानी से मिल जाए –

(24) उपदेश देनवाला –

(25) जानने की ईच्छा –

(26) पैरोंतले कुचला हुआ –

(27) देवों की पूजा में अर्पित पुष्प –

(28) वह स्थान जहाँ रेत ही रेत हो –

(29) जिसको देखा नहीं जा सकता –

(30) साथ में काम करनेवाला –

(31) मृत्यु को जीतनेवाला –

(32) मन का विज्ञान –

(33) पूरे जीवन तक –

(34) शिर पर धारण करने–योग्य –

(35) जहाँ शव को जलाया जाता है –

(36) ईस जन्म के पहले का जन्म –

(37) जो सहा ना जा सके –

(38) विचारों का आदान–प्रदान करना –

(39) हिसाब–किताब लिखने की कॉपी –

(40) अंगो का फड़कना –

(41) प्राचीन इतिहास से संबंधित –

(42) जहाँ दो रास्तेमिलते है –

(43) जो सबसे ज्यादा नजदीकी हो वह –

(44) मृग की आँखो जैसी, आँखोवाली –

(45) महल का बड़ा दरवाजा –

(46) अंगुलि के बीच का जोड –

(47) जहा ँस्त्रियाँ पानी भरती है, वह स्थान –

(48) वह जमीन जो राज्य की ओर से पुरस्कार के रूपमें दी जाती है –

(49) इन्द्र की पत्नी –

(50) दो व्यक्तियों का युद्ध –

(51) जो मर नहीं सकता है, वह –

(52) पापों के समूह को दूर करनेवाला –

(53) सुंदर शरीरवाली स्त्री –

(54) पितरों को पानी देना –

(55) बारहमास का प्राकृतिक चित्रण करनेवाला काव्य –

(56) वह रस्सी जिस पर कपड़े सुखाए जाते है –

(57) मृत्यु के बाद दी जानेवाली अंजली –

(58) जिसका कोई आकार न हो –

(59) हमेशा कायम रहनेवाला –

(60) लकडी की वस्तु बनानेवाला –

(61) हाथ से बना चमड़े का जूता –

(62) जिसके आरपार देखा जा सके –

(63) घूमता रहनेवाला व्यक्ति –

(64) सनसनी पैदा करनेवाली बात –

(65) नाखून और दांतो पर आधारित –

(66) दहीं मथने का साधन

(67) चार दिशाएँ –

(68) पीछे चलनेवाला –

प्रश्न – 36–37

● **निम्न लिखित मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य–प्रयोग कीजिए :** **(02)**

(1) कान के परदे फाडना –

(2) चकमा देना –

(3) कपाल क्रिया करना –

(4) व्यंग्य बाण छोड़ना –

(5) हाथापाई करना –

(6) हक्का–बक्का होना –

(7) जमीन–आसमान एक करना –

(8) चेहरे पर हवाई उड़ना –

(9) हथेली पर सरसो जमाना –

(10) जहाज का पंछी होना –

(11) कलई खोलना –

(12) संसार डूब जाना –

(13) मन खट्टा होना –

(14) कमर कसना –

(15) नाकों दम करना –

(16) पैरों तले रौंदना –

(17) हाथ पकड़ना –

(18) सिर आँखो पर रखना –

(19) आसमान के तारे तोड़ना –

(20) छाती पर मूँग डालना –

(21) रोंगटे खडे होना –

(22) बाजी मारना –

(23) कलेजे का टुकडा होना –

(24) वीरगति पाना –

(25) बाजी मारना –

(26) वीला होना –

(27) कान पकना –

(28) काया पलट करना –

(29) सिर पर पैर रखना –

(30) ईति हो जाना –

(31) मत पर पत्थर पड़ना –

(32) कोढ की खाज होना –

(33) मन खट्टा होना –

(34) माथा ठनकना –

(35) छाती पर मूँग दालना –

(36) शपथ उतारना –

(37) दाँत बजना –

(38) दो पाटों के बीच आना –

(39) संसार डूब जाना –

(40) जाग उढ़ना –

(41) प्राणों के लाले पड़ना –

(42) जंजीरे कटना –

(43) निशान मिटा देना –

(44) लगाम ढीली करना –

(45) खून खौलना –

(47) ठेस पहुँचाना –

(48) पसीने से नहाना –

(49) महीन मार मारना –

(50) मथानी सी फिरना

प्रश्न : 38–39

- **निम्न लिखित कहावतों का अर्थ लिखिए :** **(02)**

(1) आप सुखी तो जग सुखी –

(2) न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी –

(3) ते–ते पाँव पसारिये, जे ती लंबी सोर –

(4) नाच न जाने आँगन टेढ़ा –

(5) अधजल गगरी छलकात जाय –

(6) पराधीन सपने हूँ, सुख नहीं ।

(7) जो तोको काँटा बुवै, तो हि बौव तू फूल ।

(8) कथनी मीठी खाँड–सी,करनी विष की लोय

(9) आप मुए पीछे डूब गई दुनिया

(10) अकल बड़ी कि भैंस –

(11) अंधेरी नगरी चौपट राजा–

(12) अन्धों में काना राजा –

(13) जो बीत गई सो बात गई –

(14) जैसी करनी, वैसी भरनी ।

(15) बीती ताहि बिसारी दे, आगे की सुधि लेई ।

(16) जिसकी लाठी, उसकी भैंस ।

(17) भौंकते हुए कुत्ते काटा नहीं करते ।

(18) दूध का दूध, और पानी का पानी ।

(19) बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछताय ।

(20) हाथ कंगन को आरसी क्या ?

(21) अपनी–अपनी डफली, अपना–अपना राग ।

(22) जो घट प्रेम, संचरे, सो घट जान मसान ।

(23) करेला और नीम चढ़ा ।

(24) संयम सब का मूल –

(25) कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तैली ।

(26) साई अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोई ।

(27) नौ नगद, न तेरह उधार ।

(28) ऊँची दुकान, फीका पकवान ।

प्रश्न : 40–41

● **निम्न लिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए :** **(02)**

(1) मोहन और ममता विदेश गया ।

(2) रीना ने पिताजी को प्रार्थना की ।

(3) मेरा आत्मा रो रहा है ।

(4) बारीस की मौसम थी ।

(5) मुझे बहार जाना है ।

(6) आप किसको मिलने आए हो ?

(7) पृथ्वी पर सूर्य के किरण फैलने लगे ।

(8) यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलेगा ।

(9) अकवाहों में युद्धकाल का बड़ा प्रभाव होता है ।

(10) ईस मंदिर में अनेकोगणेश की मूर्तिया है ।

(11) कायदा हरएक आदमियों पर लागू होता ।

(12) सुदामा श्रीकृष्ण को मिलने गए ।

(13) में आपको वादा करता हूँ ।

(14) वे हमसे त्याग की उपेक्षा करते थे ।

(15) गाँधीजी असली भारत के सपूत थे ।

(16) प्रेमचंद ने लिखा 'गबन' तुमने पढ़ा है ।

(17) यह मेरी स्कूल है ।

(18) राधा का घर मीना से अच्छा है ।

(19) लताजी का आवाज मधुर है ।

(20) यहतो बहोत मुश्किल सवाल है ।

(21) सुरत की आबादी ईतिहास में प्रसिद्ध है ।

(22) सीमा की साडी मीना से अच्छी है।

(23) यह सब पुस्तकें उठा ले जाओ।

(24) मोहन को दो भाई है।

(25) मोना ने आचार्यजी को बिनती की।

(26) मेरे से भूल हो रही है।

(27) गरीबों को प्रेम करो।

(28) गाँधीजी एक महान व्यक्ति थी।

(29) मेरी पास दो किताब है।

(30) पुष्पा ने एक कविता को गाई .

(31) तुम्हारा सारा मेहनत बेकार गया।

(32) ममता में सद्‌गुण एक बहुत बड़ा है।

(33) उनकी हिन्दी मातृभाषा नहीं है।

• • •

विभाग-C

पठन (अपठित)

(16) सार-लेखन - (प्रश्न-42)

(17) पद्यांशो का भावार्थ (प्रश्न - 43, 44)

(18) गद्य-समीक्षा - (प्रश्न - 45 से 49) **(05)**

● **निम्न लिखित प्रत्येक गद्यांशका एक-तिहाई भाग में सार लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए ।**

(1) किसी भी कार्य में सफलता करने के लिए व्यक्ति को द्रढ संकल्प होना जरूरी है । गुलामी और आतंक के वातावरण में क्रांतिकारी किस तरह विद्रोह का बिगुल बजा लेते है ? सूखी रोटियाँ खाकर और कठोर धरती को शय्या बनाकर भी देश को आजाद कराने का कार्य कैसे कर पाए महाराणा प्रताप ? वह कौन-सा बल था,जिसके आधार पर मुठ्ठी भर हड्डियोवाले महात्मा गांधी विश्वविजयी अंग्रेजो के देश के बाहर कर शके ? निश्चय ही यह थी मन की सबलता । मन की सबलता के लिए सत्य, न्याय और कल्याण के आदर्श का होना जरूरी है । जिसके मन में सत्व की शक्ति नहीं, जो न्याय के पक्ष में नहीं है, उसके मन में तेज नहीं आ पाता । अनुचित कार्य करनेवाला व्यक्ति आधा मन यूँ ही आ पाता । अनुचित कार्य करनेवाला व्यक्ति आधा मन यूँ ही हार बैठता हैं । उसके मन में एक छिपा हुआ चोर होता है, जो उसे कभी सफल नहीं होने देता ।

(2) जीवन एक अनमोल निधि है । यदि आप किसी कारणवश उसका समुचित लाभ अथवा आनंद नहीं उठा पाते, तो आपका पहला कर्तव्य है कि आप अपनी वर्तमान परिस्थिति का अच्छी तरह विश्लेषण करें । आपकी समस्या क्या है, इसे भली-भाँति समझें और अपनी मुश्किलों को दूर करने का उपाय सोचे । इसके विपरीत यदि आप परिस्थितियों को अपने ऊपर हावी होने देते हैं और वास्तविक एवं कल्पित कष्टो से मन को दु:खी बनए रहते हैं, तो आप जीवन का रस नहीं ले सकते । बहुत संभव है, आपका कष्ट आर्थिक हो । परिवार के कई लोगों के भरण-पोषण के लिए आपको अप्रिय अथवा अरुचिकर कार्य भी करने पडते हो, आपको काफी वेतन न मिलता हो अथवा किसी गंभीर कष्ट से आप दबे हो, लेकिन घबराने से क्या इन सबका निराकरण हो जाएगा ? अत: समस्या से डरिए मत, उसकी शिकायत मत कीजिए, बल्कि जूझने के लिए तैयार हो जाईए ।

(3) स्वार्थ तो सब में होता है । पशु में भी होता है । मनुष्य में भी होता है । जहाँ तक स्वार्थ का संबंध है, मनुष्य पशु ही तो है और मनुष्य का बडा । अगर पशु कहना कुछ कड़ा मालूम होता है, तो उसे ''बड़ा पशु'' कहिए । पशु का स्वार्थ छोटा होता है और मनुष्य का बडा । और नहीं तो क्या उन आदमीनुमा लोगों को मनुष्य ही कहेंगे, जो पेट पालने के लिए, स्वार्थ के लिए, खुद्दगरजी के लिए झूठ बोलते हैं, दगा करते हैं, जो और भी बड़े स्वार्थी होते हैं, वे पैसे के बल पर कभी अंध जनता को पैसे की शराब पिलाकर मतवाला करते हैं और निरीहो को रक्तशोषण का औजार बना लेते हैं । कुछ बुद्धि के बल पर उन्हें धार्मिक ढोंग का नशा पिलाकर लोगों को जलील करते हैं, देश का देश तबाह करा देते हैं । कुछ अधिकार का मद पिलाकर गरीबों की पसलियाँ दुह लेते हैं । क्या इन आदमियों को भी आप आदमी कहेंगे ?

(4) मनुष्य जहाँ जन्म लेता है, जहाँ की धूल में खेलकर बड़ा होता हैं, वहाँ से उसे स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। वहाँ के सभी लोग उसके जाने–पहचाने होते हैं। लगभग सभी उसके समान भाषा बोलते हैं और सभी का रहन–सहन एक–सा होता हैं। ऐसी दशा में वहाँ के लोगों से ममता होना स्वाभाविक हैं। मनुष्य चाहे कितने ही अच्छे स्थान पर रहने लगे, पर उसका मन जन्मभूमि में पहुँचने को उत्सुक रहता है। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। जिस देश में हमने जन्म लिया है, जिसके अन्न, जल और वायु से हमारा पालन हुआ है, उसके प्रति प्रेम की भावना रखना हमारा कर्तव्य हैं। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति हैं। यदि देश गिरी दशा में होगा तो न हम अधिक दिन तक संपन्न रह सकते हैं और न कहीं हमारा मान हो सकता है। देश के प्रति सबको ममता की भावना रखनी चाहिए।

(5) निंदा का उद्‌गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दुसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे पुष्टि होती हैं। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यो–ज्यों कर्म क्षीण होता जाता हैं, त्यों–त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती हैं। कठिन कर्म ही ईर्ष्या, द्वेष और इनसे उत्पन्न निंदा को मारता है। इंद्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला हैं। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे–बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती हैं।

(6) जीवन में साहित्य की उपयोगिता अनिवार्य हैं। साहित्य मानवजीवन को वाणी देने के साथ समाज का पथ–प्रदर्शन भी करता है। उपयोगिता की द्दष्टि से देखे तो साहित्य के अध्ययन से अनेक लाभ हैं। साहित्य मानवजीवन के अतीत का ज्ञान कराता हैं, वर्तमान का यथार्थ चित्रण करता है और भविष्य के निर्माण की प्रेरणा देता हैं। प्रत्येक आनेवाला समाज और युग इनसे प्रेरणा लेता हैं। साहित्य ही हमे मनुष्य की कोटि में बनाए रखता हैं। किसी समाज का साहित्य क्षीण होने लगे तो वह समाज भी रसातल को चला जाता है। साहित्य समाज के साथ कार्य करते हुए भी समाज के लिए प्रकाश के स्तंभ का कार्य करता हैं। साहित्य का आलोक–पुंज सूर्य की भाँति समाज के समस्त विकारों का हरण करता हैं तभी वह सत्–साहित्य कहलाने का अधिकारी होता है।

(7) आज भ्रष्टाचार हमारे ऊपर बुरी तरह हावी हो गया है। इसी कारण देश में सर्वत्र असत्य, अनाचार, कालाबाजारी, सिफारिश, रिश्वत, जमाखोरी, मुनाफाखोरी आदि का खुलकर तांडल नृत्य हो रहा हैं। भला इस स्थिति में कोई देश कैसे उन्नति कर सकता हैं ? भारत जैसे स्वतंत्र देश के लिए प्रशासन का भ्रष्टाचार एक अभिशाप है, कलंक है। राष्ट्र के इस प्रबल शत्रु को मारने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने की आवश्यकता हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब यहाँ के देशवासियों में नैतिक और चरित्र–बल हो। इसकी पूर्ति के लिए जनता को स्वार्थपरता, नेताओं को कुर्सी का मोह, अपने–पराये, जातिवाद आदि की भावना को त्यागना होगा। अन्यथा भ्रष्टाचार की स्थिति में हमारी समस्त योजनाएँ और विकास कार्यक्रम भली–भाँति कार्यान्वित नहीं हो सकेंगे। यदि यह भ्रष्टाचार पनपता ही रहा, तो हमारी स्वतंत्ता खतरे में पड़ जाएगी।

(8) ''मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।'' चाहे प्रार्थना, पूजा, जुलुस, बाजे, मंदिर आदि हो अथवा नमाज , रोजा, इद, मुहर्रम, मस्जिद या गिरजाधर वगैरा हो; जिस क्षण हम यह महसूस करने लगें की उनमें शामिल होने में हमारे अपने अथवा वहाँ इकट्ठा हुए बहुत–से लोगों के दिलों में ईश्वर कि उपासना नहीं हैं,

बल्कि अपना दुन्यवी और कौमी मकसद पूरा करने की या किसी दुसरे सम्प्रदाय के लोगों से झगड़ा ठानने की द्रष्टि हैं, उसी क्षण समझदार आदमी को यह मान लेना चाहिए कि इस बात में ईश्वर, धर्म, सच्चाई या भलाई नहीं रही हैं, वह केवल एक ढकोसला, पाप और बुराई हैं। न तो उस स्थान में कोई पवित्रता रह गई हैं, न वहाँ होनेवाली विधि में। उसका एक पुरानी और पाक चीज से मिलाया जाना हमें नाहक धोखे में डालना हैं। जिस दूध में साँप ने मुँह डालकर जहर उगल दिया हो, उस दूध की तरह ये चीजें भी फेंक देने लायक ही हैं। बेहतर है कि नेक आदमी न तो मंदिर में जाय और न मस्जिद में, न दशहरा मनाये और न ईद, बनिस्बत, इसके कि इनके जरिये वह इन्सान से बैर करना सीखे।

(9) साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती हैं। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखनेवाले उसके बारे में क्या सोच रहे हैं ? जनमत की उपेक्षा करके जीनेवाला व्यक्ति दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्य को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अडोस-पडोस को देखकर चलना, वह साधारण जीव का काम है। क्रांति करनेवाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर माध्यम बनाते हैं।

(10) नए-नए ढंग से फैशन करना अथवा नए फैशन के कपड़े पहनना कोई बुरी बात नहीं हैं। पर फैशन का हूबहू-अनुकरण करना या उसे भी एक कदम आगे बढ़कर भोंडी नकल करना हमारे संस्कार और वातावरण के कतई अनुकूल नहीं है। विदेशी फिल्मों और दूरदर्शन चैनलों के माध्यम से जो फैशन घर में अनचाहे मेहमान की तरह आ रहा है वह बेहूदा और भारतीय परिस्थितियों के प्रतिकूल है। इसके बावजूद भी विदेशी तर्ज के ईस फैशन का चलन महानगरों में खूब बढ़ रहा हैं। स्कूल-कालेज की लड़कियों से लेकर कामकाजी महिलाओं और कुछ संपन्न आधुनिक घरानों की प्रौढाओ का पहनावा भी ज्यादा से ज्यादा प्रदर्शनकारी होता जा रहा हैं। यह भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल है। हमें अपनी भारतीय पृष्ठभूमि पर ही नए फैशन को अपनाना चाहिए। इससे हमारे पारंपरिक भारतीय मूल्यों पर भी कुठाराघात नहीं होगा और हमारी संस्कृतिजन्य राष्ट्रीय विरासत भी सुरक्षित रहेगी।

प्रश्न-43-44

- **निम्न लिखित प्रत्येक पद्यांशो का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :** **(08)**

(1) ऊँच-नीच का भेद न माने, वहीं श्रेष्ठा ज्ञानी है।
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।

(2) दुर्बल को न सताए जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सो लोह भसम हो जाय।

(3) जो रहीम उत्तम प्रकृत्ति का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

(4) सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का वर्ष चमकता उसके पीछे जब जगमग है।

(5) करत–करत अभ्यास ते, जडमति हो सुजान ।
रसरी आवत–जात ते सिल पर परत निसान ॥

(6) जो जल बाढै नाँव में, घर में बाढै दाम ।
दोनों हाथ उलीचिए, यहि सज्जन को काम ।

(7) बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लगे अति दूर ॥

(8) श्रम जीवन का सार है, श्रम मानव का हार ।
श्रम करना है गुण महा, श्रम सच्चा व्यवहार ॥

(9) कबीर कुआँ एक है, पानिहारिन अनेक ।
बर्तन सबके अलग–अलग, पानी सब में एक ।

(10) अपनी पहुँच विचारकै, करतल करिये दौर ।
ते ते पाँव पसारिये, जेति लांबी सौर ॥

(11) ऐसी बानी बोलिए, मन का आया खोय ।
औरन को शीतल करैं, आप हुँ शीतल होय ।

(12) काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब ।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब्ब ॥

(13) कुछ किए बिना जय–जयकार नहीं होती ।
कोशिष करनेवालों की हार नहीं होती ।

(14) अपनी सीमाओं में रहकर जीना सीखो ।
क्यों विष पी रहे हो, अमृत पीना सीखो ।

(15) दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय ।
मुँह ढोर के चाम से लोह भसम हो जाय ।

(16) वृक्ष कबहुँ नहि फल, भखें, नदी न संचे नीर ।
परमाथ के कारनै, साधुन, धरा शरीर ॥

(17) रहिमन धाग प्रेम का मत तोडो घटकाय ।
टूटे से फिर ना जुडे, जुडे गाँठ परिजाय ॥

(18) नीच निचाई नहि तजै सज्जन हू के संग ।
तुलसी चंदन विदप बसि, बिनु विष भए न भुजंडा ॥

(19) आव नहीं, आदर नहीं, नहीं नैनम में नेह ।
तुलसी तहाँ न जाईए, भले कंचन बरसे मेह ॥

(20) निन्दक नियरे राखिए, आँगन कुठि छवाय ।
बिनु पानी बिनु साबुन, निर्मल करे सुभाय ॥

(21) बुरे लगत सिख के वचन, हिए बिचारौ आप ।
करवे भेषज बिन पिये, मिटै न तन का ताप ॥

(22) धन रहीम जल पंक को, लंघु जिय पियत अघाय ।
उदधि बडाई कौन है, जगत पियासो जाय ॥

प्रश्न–45 से 49

- **निम्न लिखित प्रत्येक गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :** **(05)**

(1) स्त्रियों की शिक्षा का स्वरूप पुरुषों की शिक्षा के स्वरूप से अलग रहना चाहिए। कताई, बुनाई, सिलाई, कटाई आदि की शिक्षा तो उन्हे दी ही जाए, किंतु ईसी के साथ उन्हें कुटीर उद्योगों में भी निपुण बनाया जाना चाहिए, जिससे कि बुरा समय आने पर वे किसी की मोहताज न रहें। स्त्रियों को शिक्षित करने से हमारा घर स्वर्ग बन सकता हैं। नासमझ और फूहड़ औरतों से परिवार तबाह हो जाते हैं। जिस घर की स्त्रियाँ सुशिक्षित और सुसंस्कृत होती हैं, वे घर जिंदा विश्वविद्यालय होते हैं। शिक्षा का अर्थ किताबी ज्ञान ही नहीं है और न ही अक्षरज्ञान है, वह तो जीने की कला है।

प्रश्न :

(1) स्त्रियों को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए ?

(2) हमारा घर स्वर्ग कब बन सकता है ?

(3) शिक्षा का अर्थ क्या है ?

(4) बुरे समय में स्त्रियाँ स्वावलंबी कैसे रह सकती है ?

(5) इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।

(2) हँसने का एक सामाजिक पक्ष भी होता है। हँसकर हम लोगो को अपने निकट ला सकते हैं और व्यंग करके उन्हें दूरस्थ बना देते हैं। जिसको भगाना हो, उसकी थोडी देर हँसी–खिल्ली उडाइए, वह तुरंत बोरिया–बिस्तर गोलकर पलायन करेगा। जितनी मुक्त हँसी होगी, उतना समीप व्यक्ति खींचेगा। ईसीलिए तो श्रोताओं की सहानुभूति अपनी ओर घसीटने के लिए चतुर वक्ता अपना भाषण किसी रोचक कहनी या घटना से आरंभ करते हैं। जनता यदि हँसी, तो चंगुल में फँसी। सामाजिक नियमों और मूल्यों को मान्यता दिलाने और रुढियों को निष्कासित करने में पुलिस या कानून सहायता नहीं करता, किंतु वहाँ हास्य का चाबुक अचूक बैठता है। हास्य के कोडे, उपहास – डंक और व्यंग्यबाण मारकर आदमी के रास्ते पर लाया जा सकता है। इस प्रकार गुमराह बने हुए समाज की रक्षा की जा सकती है।

प्रश्न :

(1) जनता चंगुल में कब फँसती हैं ?

(2) हास्य का चाबुक कहाँ सहायक होता है ?

(3) आदमी को रास्ते पर लाने का कौन–सा उपाय बताया गया है ?

(4) व्यंग्य का परिणाम क्या होता है ?

(5) ईस परिच्छेद के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(3) जीवन में साहित्य की उपयोगिता अनिवार्य है। साहित्य मानव–जीवन को वाणी देने के साथ समाज का पथ–प्रदर्शन भी करता है। उपयोगिता की दृष्टि से देखें तो साहित्य के अध्ययन से अनेक लाभ है। साहित्य मानव–जीवन के अतीत का ज्ञान कराता है, वर्तमान का यथार्थ चित्रण करता है और भविष्य के निर्माण की प्रेरणा देता है। प्रत्येक आनेवाला युग और समाज इससे प्रेरणा लेता है। साहित्य की हमें मनुष्य की कोटि में बनाए रखता हैं। किसी समाज का साहित्य क्षीण होने लगे तो वह समाज भी रसातल को चला जाता है। साहित्य समाज के साथ कार्य करते हुए भी समाज के लिए प्रकाश के स्तंभ का कार्य करता है। साहित्य का आलोक–पुंज सूर्य की भाँति समाज के समस्त विकारो का हरण करता है, तभी वह सत्–साहित्य कहलाता है।

प्रश्न :

(1) साहित्य के अध्ययन से कौन–सा लाभ होता है ?

(2) सत्–साहित्य किसे कहा जा सकता है ?

(3) साहित्य क्या कार्य करता है ?

(4) साहित्य क्षीण होता है, तब समाज को क्या होता है ?

(5) ईस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।

(4) हाथ की मजदुरी से ही सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने कन्याओं और स्त्रियो के ऐसी कलावती देखा है कि रेशम के छोटे–छोटे टुकडों को अपनी हस्तकारी की बदौलत हजारों की कीमत का बना देती है। नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थो और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती है। जापान–निवासी कागज, लकड़ी और पत्थर की बड़ी अच्छी मूर्तिया बनाते हैं। करोड़ो रुपयों के हाथ के बने हुए जापानी खिलौने विदेशो में बिकते है। हाथ की बनी हुई जापानी चीजे मशीन से बनी हुई चीजों को मात करती हैं। संसार के सब बाजारोंमें उनकी बड़ी माँग रहती है। पश्चिमी देशों के लोग हाथ की बनी हुई जापान की अद्‌भुत वस्तुओ पर जान देते हैं। एक जापानी तत्त्वज्ञानी का कथन है कि हमारी दस करोड़ उँगलियाँ सारे काम कती हैं। उन ऊँगलियों ही के बल से संभव है, हम जगत को जीत लें। यदि भारत के तीस करोड़ नर–नारियों की ऊँगलियाँ मिलकर कारीगरी के काम करने लगे तो उनकी मजदूरी की बदौलत कुबेर का हल उनके चरणों में आप–ही आप आ गिरे।

प्रश्न :

(1) जापान की स्त्रियाँ किस कला में निपुण हैं ?

(2) जापान की हाथ कारीगरी की कौन-सी चीजों की विदेशों में बड़ी माँग रहती हैं ? क्यों ?

(3) जापानी तत्त्वज्ञानी के कथन का तात्पर्य क्या हैं ?

(4) हम भारत को किस प्रकार समृद्ध बना सकते हैं ?

(5) इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।

(5) गीता जीवन को कला सिखाती है। जब मैं देखता हूँ कि हमारा समाज आज हमारी संस्कृति के मौलिक सिद्धांतो की अवहेलना करता है, तब मेरा हृदय फटता है। आप चाहे जहाँ जाएँ, परंतु संस्कृति के मौलिक सिद्धांतों को सदैव साथ रखें। संसार के सारे सुख क्षणभंगुर एवं अस्थायी होते हैं। वास्तविकसुख हमारी आत्मा में ही है। चरित्र नष्ट होने से मनुष्य का सबकुछ नष्ट हो जाता है। संसार के राज्य पर विजयी होने पर भी आत्मा की हार सबसे बड़ी हार है। यही है हमारी संस्कृति का सार, जो अभ्यास द्वारा सुगम बनाकर कार्यरुप में परिणत किया जा सकता है।

प्रश्न :

(1) लेखक का हृदय कब फटता है ?

(2) संसार के सारे सुख कैसे होते हैं ?

(3) मनुष्य का सबकुछ कब नष्ट हो जाता है ?

(4) संस्कृति का सार क्या हैं ?

(5) इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।

(6) भारत में प्राचीन काल से दहेज प्रथा चली आ रही है। कन्या के माता-पिता अपनी क्षमता के अनुसार शादी के समय दहेज देते चले आए हैं। वर एवं कन्या के परिवारवालों में आपसी प्रेम था। इसलिए वरवाले कन्यावालो से किसी प्रकार की माँग करने में संकोच करते थे, परंतु पिछले 50 वर्षो से विवाह एक व्यापार बन गया हैं। इससे समाज दु:खी है। लड़कीवाला लड़के की योग्यता के स्थान पर धन को ही सर्वस्व मानता है और वह बड़े अमीर परिवार में अपनी लड़की को देना चाहता है। लड़का अनेक लड़कियों को देखता है और जिस लड़की के पास धन अधिक होता है, उसे चून लेता है। उसकी योग्यता को नहीं देखता। आज लड़की के विवाह का मूल आधार धन बन गया है। जिस दिन लड़की का जन्म होता है, उसी दिन से माता पिता को उसके विवाह की चिंता लग जाती है। इस बुराई को दूर करने के लिए हमें मिलकर इस प्रथा का विरोध करना चाहिए। जो दहेज लेता है, उसके लिए ऐसा कानून बनाना चाहिए कि दहेज लेनेवाले को चोरी जुआ एवं हत्या आदि अपराध करनेवालों के समान देखा जाए और सामाजिक मंच पर उसे बेइज्जत किया जाए। इस विषय पर मात्र बोलने एवं लिखने से अब काम नहीं चलेगा। हमें एक होकर इस प्रथा के विरोध में कदम बढ़ाने होंगे।

प्रश्न :

(1) भारत में प्राचीन काल में दहेज प्रथा का स्वरूप कैसा था ?

(2) अब लोगों ने किस तरह विवाह को व्यापार बना दिया है य़

(3) आज लड़की के विवाह का मूल आधार क्या बन गया है ?

(4) दहेज की बुराई को दूर करने के लिए किस तरह का कानून बनना चाहिए ?

(5) इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए।

(7) हमारे देश में धर्मो–संप्रदायो के अनेक उपासना–गृह, मंदिर, मस्जिद, गिरजाधर और गुरुद्वारे हैं। सभी शांति चाहते हैं, पर शांति का दर्शन नहीं होता नहीं। हर जगह कोई–न–कोई आंदोलन छिडा है। पत्थर, सीमेंट, गारे–चूने से बने इन भव्य, पवित्र स्थानों से मनुष्य की नैतिकता को कोई बल क्यों नहीं मिलता ? जरूरत इस बात की है कि इन धार्मिक स्थानों से नैतिकता और शांति का संदेश प्रसारित हो। इन स्थानों में परंपरागत पुजारियों की जगह गण्यमानय विद्धान हो, जो हमारे मन को शांति है और उसमें एक विशेष आस्था का संचार करे। हमें आज धार्मिक क्षेत्र में आवश्यकता है वैचारिक क्रांति की, सत्साहित्य की एवं चरित्र–निर्माळ की।

प्रश्न :

(1) हमारे देश में धर्म और संप्रदायो की क्या स्थिति हैं ?

(2) हमारे देशें कौन–कौन से धार्मिक स्थान हैं ?

(3) आज धार्मिक स्थानों से हमारी क्या अपेक्षाएँ हैं ?

(4) आज धार्मिक क्षेत्र में हमें किन बातों की आवश्यकता हैं ?

(5) इस परिच्छेद के लिए उचीत शीर्षक लिखिए।

(8) मनुष्य जहाँ जन्म लेता हैं, वहा ँ की धूल में खेलकर बड़ा होता हैं। वहा ँ से उसे स्वभाविक प्रेम हो जाता है। वहाँ के सभी लोग उसके जाने–पहचाने हो जाते हैं। लगभग सभी उसके समान भाषा बोलते हैं और सभी का रहन–सहन एक–सा होता हैं। ऐसी दशा में वहाँ के लोगो से उसकी ममता का होना स्वाभाविक है। मनुष्य चाहे कितने ही अच्छे स्थान पर क्यों न रहने लगे, उसका मन जन्मभूमि पहुँचने को उत्सुक रहता हैं। जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। जिस देश में हमने जन्म लिया है, उसके अन्न, जल और वायु से हमारा पालन हुआ हैं, उसके प्रति प्रेम की भावना रखना हमारा कर्तव्य हैं। देश की उन्नति में ही हमारी उन्नति है। यदि देशगिरी दसा में होगा, तो न हम अधिक दिन संपन्न रह सकते हैं और न हमारा मान हो सकता है। देश के प्रति सबके ममता की भावना रखनी चाहिए।

प्रश्न :

(1) मनुष्य को जन्मभूमि से स्वाभाविक प्रेम क्यों होता हैं ?

(2) अपनी जन्मभूमि के प्रति कौन–सी भावना रखना हमारा कर्तव्य हैं ?

(3) स्वर्ग से भी श्रेष्ठ किसे कहाँ गया है ?

(4) हमारी उन्नति किस में निश्चित हैं ?

(5) इस परिच्छेद के लिए एक उचित शिर्षक दीजिए।

(9) किसी भी देश या काल के लिए जवान (सैनिक) तथा शिक्षक दोनो ही महत्त्वपूर्ण हैं। किसी एक के बिना समाज सुरक्षितनहीं रह सकता। दोनों ही समाज के रक्षक हैं, किन्तु उनके कार्यो में भिन्नता दिखाई पड़ती हैं। एक शत्रुओं से देश की रक्षा करता है, तो दूसरा देश को समृद्ध बनाता हैं। फिर भी शिक्षक का उत्तरदायित्व जवान से कहीं बढ़कर हैं। भावी, नागरिक, निर्माण करने की जिम्मेदारी शिक्षक के ऊपर हैं। वह उसके शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास का जनक हैं, जिस पर व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्रनिर्भर हैं। शिक्षक के ही द्वारा कोई योग्य सैनिक बन सकता हैं। हमारे अहिंसक आंदोलन ने दुनिया को दिखा दिया है कि शिक्षक सैनिक से कहीं श्रेष्ठ हैं। इसे बनावटी शस्त्रों की जरुरत नहीं हैं। इसका आलिक बल सब शस्त्रों से बड़ा है।

प्रश्न :

(1) समाज की सुरक्षा किस पर निर्भर हैं ?

(2) शिक्षक तथा जवान समाज में क्या महत्त्व रखते हैं ?

(3) शिक्षक पर कौन-सी जिम्मेदारी हैं ?

(4) शिक्षक का उत्तम शस्त्र कौन-सा है ?

(5) इस परिच्छेद के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(10) मानव के व्यक्तिगत का निर्माण करनेवाले विभिन्न तत्त्वो में चरित्र का सबसे अधिक महत्त्व हैं। चरित्र एक ऐसी शक्ति है जो मानवजीवन को सफल बनाती हैं। चरित्र की शक्ति ही आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता उत्पन्न करती है। चरित्र मनुष्य के क्रिया-कलाप और आचरण के समूह का नाम हैं। चरित्ररूपी शक्ति के सामने पाशविक शक्ति भी नष्ट हो जाती हैं। चरित्र की शक्ति विद्या, बुद्धि और संपत्ति से भी महान होती हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कई चक्रवर्ती सम्राट घन, पद, वस्तु और विद्या के स्वामी छे, परंतु चरित्र के अभाव में अस्तित्त्वविहीन हो गए।

प्रश्न :

(1) चरित्र का क्या महत्त्व हैं ?

(2) चरित्र का मानवजीवन पर क्या प्रभाव पड़ता हैं ?

(3) चरित्र किसे कहते हैं ?

(4) इतिहास किस बात का साक्षी है ?

(5) इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए।

● ● ●

विभाग-D लेखन

(19) निबंध लेखन – (प्रश्न – 50)

(20) कहानी लेखन – (प्रश्न – 51)

(21) विचार-विस्तार – (प्रश्न – 52, 53)

(22) पत्र-लेखन – (प्रश्न – 54)

● **निम्न लिकित विषय पर लगभग 20 वाक्यो में निबंध लिखिए : (08)**

(1) हमारे जीवन में परिश्रम का महत्त्व ।

परिश्रम से लाभ-परिश्रमी व्यक्ति का समाज में स्थान-उपसंहार

(2) आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या ।

परिचय – क्यों – कहाँ – कहाँ, क्या-क्या करता है ? सामना अनावश्यक – कौन करे ? कैसे करे ? – कब करे ? – संभावना – सफलता –

(3) मातृप्रेम –

माता की ममता – पशु-पक्षियों में मातृस्नेह – अप्रितम – मातृप्रेम – पितृप्रेम से सलाह – माता के प्रेम का प्रभाव वास्तल्यमूर्ति माँ –

(4) प्रदूषण – एक विकट समस्या –

चारों ओर प्रदूषण – प्रकार- प्रदूषण के कारण – दुष्परिणाम – काम करने का उपाय – संदेश –

(5) बुढ़े की आत्मकथा –

परिचय – बचपन – युवानी का समय – वृद्धावस्था – असह्य जीवन – उपसंहार –

(6) पुरुषार्थ ही प्रारब्ध है ।

प्रारंभ – अर्थ – महत्त्व – पुरुषार्थ रहित जीवन – पुरुषार्थ और भाग्य – उदाहरण – उपसंहार –

(7) सैनिक की आत्मकथा –

परिचय – बचपन – फौज में भरती – तालीम – सुखद – अनुभव – गौरवपूर्ण जीवन – उपसंहार ।

(8) दहेज : एक सामाजिक अभिशाप

दहेज मृत्यु – दहेज का प्राचीन – अर्वाचीन रुप – वधूओं पर अत्याचार 0 कन्यापक्ष की दुर्गति – दहेज – प्रथा –

(9) भारत की जन-संख्या : विकट समस्या

सारी समस्याओं की जड़ – जनसंख्या वृद्धि के परिणाम – कारण- नियंत्रण जरुरी – संदेश –

(10) समय का सदुपयोग :

महत्त्व – समय कैसे नष्ट करते है- समय का सदुपयोग कैसे कर- समय महापुरुष – उपसंहार :

(11) चलचित्र से लाभ–हानि :

आधुनिक जीवन में चलचित्रों का स्थान – मनोरंजन का स्थान – सामाजिक समस्याओं का समाधान – शैक्षणिक योगदान – समाज पर बुरे परिणाम ।

(12) मजदुरिन की आत्मकथा :

प्रस्तावना – पारिवारीक जीवन – मजदुरिन कैसे बनी – जीवन की मुसिबत – कठोर श्रम – अतिरिक्त शोषण – दयनीय आकस्मिक परिवर्तन– उपसंहार ।

(13) देश के प्रति युवकों का कर्तव्य :

प्रस्तावना – युवकही देश के रक्षक – देशकी प्रगति के आधार – राष्ट्र के निर्माण को अन्य कार्य – उपसंहार ।

(14) मनोरंजन के आधुनिक साधन :

मनोरंजन की आवश्यकता – प्राचीन स्वरूप – आधुनिक साधन – घरेलु – बाहरी साधन – साहित्यिक मनोरंजन जीवन में मनोरंजन का स्थान ।

(15) अहिंसा :

परिभाषा – भारतीय ईतिहास में अहिंसा – अर्वाचीन युग –गाँधीजी और अहिंसा – सत्य की उपासना – अमोधशस्त्र – अहिंसा परमो धर्मः ।

(16) विद्यार्थी जीवन की स्मृतियाँ :

प्रस्तावना – विद्यार्थी जीवन – स्मृतियाँ – पाठ़शाला में प्रवेश – मधुर घटनाएँ – गुरुजनों का प्रभाव – मित्रगण – पाठ़शालासे लिया ।

(17) जीवन में शिक्षा : वनमें वृक्ष

शिक्षा का अर्थ महत्त्व – वन में वृक्षो का महत्त्व – शिक्षा से ही जीवन में हरियाणी – शिक्षाविहिन – वृक्षहीन जीवन – उपसंहार

(18) हाय रे ! महँगाई ।

प्रस्तावना – अर्थ और स्वरूप – महँगाई के कारण – दुष्परिणाम – नियंत्रण के उपाय – उपसंहार –

प्रश्न : 51

- निम्न लिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखकर उचित शीर्षक दीजिए और सीख लिखिए :

(1) एक राजा – देश–विदेश में उसकी बुद्धि की ख्याति – कश्मीर की राजकुमारी का उसके पास आना – फूलों की दो मालाएँ साथ – एक असली – दुसरी नकली – हाथ लगाएँ बिना असली को बताने को कहना – राजा का खिड़कियों को खोलने का आदेश – मधुमक्खी का भीतर आना – असली पर बैठ़ना – सीख ।

(2) एक भिखारी – देवता प्रसन्न – वरदान मुंहरे माँगना – देवता की शर्त – जो मुँहरे जमीन पर गिरेगी उनकी मिट्टी होगी – भिखारीन का पुरानी झोली लाना – कुछ मुहरे देना – लोभ में आकर और मुहरे माँगना – थैली फटना – परिणाम ।

(3) धना जंगल – एक साँप – राहीगीरों को काँटना – साँप साधु की संगति में – उपदेश – 'काटो–मत' – परिणाम–लोगों का साप को ढेले मारकर सताना– साधु का दुबारा उपदेश फूककारो लेकिन काटो मत ।

(4) एक विद्यार्थी – मुंदबुद्धि का होना – माता–पिता निराश – शिक्षक का समझना – ध्यान न देना – निराश होकर चल पड़ना – मार्ग में कुआँ – स्त्रियों का पानी भरना, यह देखना, कुएँ के पत्थरों पर गहरे निशान – कारण पूछना, रस्सी के निशान – बोध – अभ्यास में जुट जाना – विद्वान बनना –

(5) संध्या का समय – मुंबई के सड़को पर भीड़ – कार में बैठे हुए शेठ का पर्स गिरना – एक गरीब विद्यार्थी को मिलना – तरह–तरह के विचार – दूसरे दिन हेड–मास्तर को बताना – समाचारपत्र में खबर छपाना – पढ़कर शेठ का स्कूल में आना – बालक की सच्चाई पर खुश – बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए सारा धन दे देना – बाद में ओफिस में मैनेजर रखना – सीख ।

(6) एक विद्यार्थी परीक्षा में असफल – निराशा – परीक्षा में – आत्महत्या करने जाना – पेड़ देखना – बार–बार मकड़ी का चढ़ने का प्रयत्न – सफलता मार्ग – ध्यान से पढ़ना – सफल होना ।

(7) गधे पर नमक का बोझ – नदी पार जाना – अचानक – गधे का नदी में गिरना – बोझ का हलका होना – दुसरे दिन मालिक का अधिक बोध डालना – गधे का जान–बुझकर नदी में गिरना – गधे को सबक सिखाने का मालिक का संकल्प – अगले दिन रूई का बोझ लादना – गधे का नदी में गिरना – सीख।

(8) धनवान शेठ का रात का चौकीदार – एक रात सपने में रेलगाडी का अकस्मात देखना – दुसरे दिन उसी गाडी से जानेवाले शेठ को रोकना – शेठ का सचमुच बच जाना – चौकीदार को ईनाम – परन्तु साथ–साथ नौकरी से भी निकाल देना – 'तुम अपने काम में वफादार नहीं – सीख ।

(9) जहाँगीर – न्यायी बादशाह – बेगम नुरजहाँ का शिकार खेलने जाना – एक धोबी को गोली लगना – विधवा धोबिन की शिकायत – बादशाह दुविधामें – एक ओर प्रेम – दुसरी ओर न्याय – न्याय की विजय – सीख ।

(10) एक युवक को माता–पिता पढ़ाकर अफसर – शादी – पत्नी से मिलकर माता–पिता का अपमान – तिरस्कार – नफरत – युवक के बेटे का देखना – युवक वृद्ध – अपने बेटे की मार – नफरत – खाना नहीं देना – अपमानित वृद्ध का पूछना – 'आपने ही तो यही किया था । युवक पछताया ।

(11) भीड़ के लोगों का एक आदमी पर पत्थर – महात्मा का आना – पापों की शिकायत – महात्मा से न्याय की माँग – महात्मा का न्याय – ''ठीक है, पत्थर मारो, पर पहला पत्थर वह उठाये जो पूर्ण निष्पाप हो'' किसी का आगे न बढ़ना – भीड़ का चुपचाप रहना – महात्मा का उपदेश ।

प्रश्न : 52 , 53

- **निम्न लिखित विधानों का विचार–विस्तार लिखिए :** **(04)**

(1) कर भला तो होगा भला ।

(2) वही मनुष्य है, कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

(3) सच्चा मित्र जीवन की औषधि है ।

(4) बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय ?

(5) पराधीन सपने हूँ सुख नाही ।

(6) विपत्ति कसौटी जे कसे तेई साँचे मीत ।

(7) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

(8) जहाँ सुमति तहिं संपत्ति नाना ।

(9) खाली दिमाग, शैतान की दुकान ।

(10) नर जो करनी करे, तो नारायण बन जाय ।

(11) मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है ।

(12) दु:खियों की सेवा ईश्वर की सेवा है ।

(13) जस फल बोये, तस कल चाखा ।

(14) बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।

(15) जो बीत गई, सो बात गई ।

(16) वृक्ष ही जल है, जल ही रोटी है, रोटी ही जीवन है ।

(17) मन का गुलाम, सबका गुलाम ।

(18) मानवहृदय महासागर के समान है ।

(19) अपाहिज तन, अडिग मन ।

(20) बसीकरन एक मंत्र है, तब दे वचन कठोर ।

प्रश्न : 54

● निम्न लिखित सूचनानुसार पत्र लिखिए :

(1) 28, गोपी–सदन, सूरत से पार्थ अपने भावनगर निवासी मित्र पलांश की निरक्षरता दूर करने के उपाय बताते हुए पत्र लिखता है ।

(2) 40, प्राचीना सोसायटी, अहमदाबाद से प्रदीप व्यास बड़ौदा में रहनेवाले अपने दोस्त राजेश दवे को 'समाचार–पत्र' के पढ़ने से होने वाले लाभ बताते हुए पत्र लिखता है ।

(3) 18, महेसाणा नगर, निझामपुरा, बड़ौदा से मिलन राजकोट निवासी अपने मित्र चिराग को 'रक्त–दान का महत्त्व' समझाते हुए पत्र लिखता है ।

(4) 15, विवेकानंदनगर, विसनगर से विवेक अपने वलसाड वासी वरुण को 'हिन्दी भाषा का महत्त्व' समझाते हुए पत्र लिखता है ।

(5) आनंदनगर, स्टेशन रोड, आनंद से कल्याणी अपनी सखी अनुराधा को 'दहेज–प्रथा की बुराईयाँ' समझाते हुए पत्र लिखती है ।

(6) परिश्रम, गाँधीचौक, सूरत से कल्पना, बड़ौदा में निवास करनेवाली अपनी पुत्री गीता को बढ़ती हुई मँहगाई को ध्यान में रखकर घर का खर्च काम करने के लिए खत लिखती है ।

(7) 5, आनंद वाटिका, पंचासर से दिनेश पटेल अपने भरुच निवासी, सुरेश पटेल को हमारे जीवन में 'वृक्षों का महत्त्व' समझाते हुए पत्र लिखता है।

(8) 19, राम–रहीम नगर सेलवास से, मीना शाह पादरा निवासी अपनी सखी रेणु को 'बाढ़ पीड़ितो की दशा' का वर्णन लिख भेजती है।

(9) 77, रेहनुमान सोसायटी, अहमदाबाद से विमल अपने छोटे भाई सुलभ को 'व्यायाम का महत्त्व' समझाते हुए पत्र लिखता है।

(10) 10, आदर्शनगर, तरसाली, बडौदा से सचिन अहमदनगर निवासी अपने मित्र राहुल को 'चक्षुदान' का महत्त्व समझाते हुए पत्र लिखता है।

●●●